



VIVEKANAND MISSION SCHOOL

BILEY VIHAR, DAUDNAGAR

DISTT-AURANGABAD (BIHAR) PIN-824113

(A Senior Secondary School Affiliated to CBSE up to +2 Level)



HOUSE SYSTEM OF THE SCHOOL

Aiming at multidimensional growth of the students, the school has been divided into four houses, named against Rishis and Sages of ancient Philosophical Arena.

KANADA

Kanada was a Hindu sage and philosopher who founded the philosophical school of Vaisheshika and authored the text Vaishesika sutra. He lived around 2nd century BCE.

This primary area of study was 'RASAVADAM' considered to be a type of alchemy. He believed that all the living beings are composed of five elements namely water, fire, earth, air and sky. He had given the theory of earth's gravity. It was Kanada who originated the idea of anu (atom) that is indestructible particle of matter and hence eternal.

कणाद

कणाद वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक थे । वे प्राचीन भारत के महान दार्शनिक एवं ऋषि थे । उनका समय दूसरी शताब्दी ईसापूर्व है । उन्होंने वैशेषिक सूत्र की रचना की ।

कणाद ने मुख्यतः 'रसावद्म' पर कार्य किया जो रसायनशास्त्र की एक शाखा है । उनका मानना था कि समस्त जैव वस्तुएँ क्षितिज, जल, पावक, गगन और समीर इन्हीं पाँच तत्वों से निर्मित हैं । महर्षि कणाद ने पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त भी प्रतिपादित किया । वे महर्षि कणाद ही थे जिन्होंने परमाणु को किसी भी वस्तु के सार्वभौम तत्व के रूप की व्याख्या दी ।

KANVA

Kanva was an ancient Hindu rishi. He was the chancellor or overall incharge of Kanvashram, where 10,000 or more students used to study. The place 'KANVASHRAM' is located near a town Kotdwara in the state of Uttarakhand. He was foster father of Shakuntala. He had composed some of the hymns of Rigveda.

कण्व

कण्व वैदिक काल के विख्यात ऋषि थे । उन्होंने महर्षि कण्व आश्रम की स्थापना की थी , जो वर्तमान समय में हरिद्वार के निकट कोटद्वार में स्थित है । उनके आश्रम में 10,000 से अधिक अन्तेवासी विद्याअर्जन करते थे । महर्षि कण्व ने ऋग्वेद के अनेक श्लोकों (Hymns) की रचना की थी । इनके आश्रम में हस्तिनापुर के राजा दुष्यंत की पत्नी शकुन्तला एवं उनके पुत्र भरत का लालन पालन हुआ । वीर बालक भरत के नाम पर ही हमारे देश का नाम "भारतवर्ष " पड़ा ।

KAUTILYA

One of the greatest figures of wisdom and knowledge, Kautilya contributed a lot in the field of Indian history. He is estimated to have lived from 350-283 B.C. He was also known by Chanakya and Vishnugupta. He was the adviser and prime minister of Emperor Chandragupta Maurya. Kautilya was a professor at the University of Takshila (located in present day Pakistan.) His famous works include Chanakya Neeti, Arthashastra and Neetishastra. His famous work called Arthashastra is a classic example of statecraft and politics and is read in Europe and America even today. Really he was "Pioneer 'Economist of India.

कौटिल्य

कौटिल्य (अनुमानतः ईसापूर्व 350— ईसापूर्व 283) राजा चन्द्रगुप्त मौर्य के महामंत्री थे । वे चाणक्य एवं विष्णुगुप्त के नाम से भी विख्यात हैं । उन्होंने मगध के नंदवंश का नाश करके चन्द्रगुप्त मौर्य को राजा बनाया । उनके द्वारा रचित अर्थशास्त्र , राजनीति एवं अर्थनीति का ग्रंथ हैं । अर्थशास्त्र मौर्यकालीन भारतीय समाज का दर्पण माना जाता है ।

अर्थशास्त्र उनकी महान कृति है जो समाज—नीति , अर्थनीति और राजनीति पर विशद मानक सिद्धान्त प्रतिपादित करता है । उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त वर्तमान समय में भी सामयिक है । इसके अतिरिक्त नीतिशास्त्र भी उनकी महत्ती कृति है जो व्यवस्था संचालन के गूढ़ और अनुकरणीय तथ्य उपलब्ध कराता है ।

KUTSA

Kutsa was one an ancient rishi. His name is included in the list of the seven sages (the saptarishis).It is stated that Kutsa Maharishi explains the allegories of the first laws of celestial bodies. The name of Kutsa is found mentioned in the Vedas in about 40 to 50 contexts shows how the greatness of this Rishi is recognised in the Vedas.Maharshi Kutsa is credited with discovery of the term 'SWVAH' in the Gayatri Mantra.

कुत्स

महर्षि कुत्स प्राचीन भारत के एक महान ऋषि थे । महर्षि कुत्स की गणना प्राचीन काल के सप्तर्षियों में की जाती है ।
ऐसी मान्यता है कि आकाशीय पिंडों की आकृति अथवा समूहों की परिकल्पना का सिद्धान्त सर्वप्रथम कुत्स महर्षि ने ही प्रतिपादित किया था । वेदों में ऋषि कुत्स की चर्चा 40 से 50 बार आई है, जिससे उनकी महानता साबित होती है ।
गायत्री मंत्र को चौथा पद "स्वः" की रचना अथवा खोज का श्रेय भी कुत्स को ही जाता है ।